卐 ॐ 卐

।। श्री शिवताण्डवक ।।

भगवान भोलेनाथ की आराधना तथा साधना का अटूट मंत्र

:: सम्पर्क सूत्र ::

शिवमठ मंदिर, शिवमठ मार्ग, बरौली उतरेटिया रेलवे स्टेशन के समीप, लखनऊ, दूरभाष : २४४३६५७

मूल्य : श्रद्धा से पाठ

।। श्री शिवताण्डवक पाठ विधि ।।

साधक को प्रातः स्नान कर, पवित्र स्थान पर शिवलिंग या शिवप्रतिमा या शिवचित्र को सामने स्थापित कर/रखकर धूप दीप प्रज्जवलित कर विल्ब पत्र तथा पुष्प समर्पित करने के बाद पवित्र मन से शुद्ध आसन पर बैठ कर श्रद्धापूर्वक आकाश–पृथ्वी तथा भूलोक में व्याप्त दिव्य ज्योतिलिंग का ध्यान करते हुए पाठ करना चाहिये।

साधक यदि लगातार सात दिन तक 'शिवताण्डक' का पाठ कर लेता है तो शिवतत्व की प्रधानता स्वतः ही साधक को प्रतीत होनी लगती है। यदि एक माह तक नियमित पाठ कर लेता है तो उसका मोह नष्ट होने लगता है तथा यदि नियमित एक सौ एक दिन पाठ हो जाता है तो यह पाठ कभी नहीं छूट पाता है अर्थात वह साधक शिवमय हो

जाता है। ऐसा देखा गया है कि विभिन्न असाध्य रोगी परमपूज्य गुरूजी के पास जाते हैं तो वे उसे केवल 'शिवताण्डवक' के पाठ की सलाह देकर ही ठीक कर देते हैं, इसलिये 'शिवताण्डक' पाठ की विशेष महिमा है।

।। श्री शिवताण्डवक ।।

क्रीड़ा – बन्धु मातु के
प्रकाशवान अम्बक से,
अनुजों के ताप के
समूल नासकारी हो।
नग्न – रुप – देव – कवि–
वाणी से परे हो तुम,
तात तुम पालक हो,
जगत – संहारी हो ।।

भक्त – हित – काज
करने में तीव्रता अतीव,
दलितो के हेतु,
दानवीर त्रिपुरारी हो।
क्रोध की कठोरता हो
कुटिल – कुजन हेतु,
मृदुल – सुजन हेतु
शांति – सुखकारी हो।।

लपटे फणीन्द्रों के फनों
की मणियों की दुति
फैलती तो सकल
दिशायें पीत होती हैं।
लगता है जैसे काम – अरि
ने दिशा – त्रिया के
आनन पे प्रेमवश
केसर ही पोती है ।।

(7)

ऐसे मद-अन्धा गज
असुर के चर्मधारी
देवता को देखि, देह
भीति-भय खोती है।
भोले - शिवशंकर जै-
भोले शिवशंकर की
गूंज हर ओर हर
ओर गूंज होती है।।

दिव्य – भाल – लोचन में
धधक रही जो ज्वाल
काल बन मदन को
राख में मिलाया है।
ब्रम्हादिक – देवराज
करते प्रणाम जिन्हे
जिनके ललाट – चन्द्र

रश्मियों की काया है।।
जिनकी जटाओं में
निवास मातु गंग करें।
भंग – संग –अम्बकों ने
रक्त – रंग पाया है।
धर्म – अर्थ – काम – मोक्ष
सकल फलों का दे
दो दान, मान साथ
भोले तुमको बुलाया है।।

इन्द्र आदि देवों के
मुकुट के प्रसून माल
से गिरा पराग–पुष्प
धूसित चरण है।
नागराज वासुकी लपेटे
जिनका हैं जूट
जिनके ललाट मिली
विधु को शरण है।।

एक तो अमावश की
मध्य – रात्रि – कालिमा हो
उसपे भी छाये सब
ओर घिरे घन हैं।
उससे भी काली कालिमा
दिखा रही है ग्रीव
शिव की करे जो
जग तम का हरण है।।

नील – कंज – कांति मात
करती सुनील कंठ
कामदेव – मर्दक
तुम्हारी जयकार हो।
दक्ष – यज्ञ – नाशक
गजासुर – विनाशक हो
देवताधिपति – देव
जगती का सार हो।।

मंगल – मुहूर्तकारी
चौषठ – कला से युक्त
ताण्डव का नृत्य
मंद डमरू पुकार हो।
बाघ – चर्मधारी और
विजन – बिहारी शिव
कर बध्य याचना
तुम्हारी जयकार हो।

पाहन में पुष्प में
तुम्हारी रूप छवि
सर्प मोतियों की माल देखूँ
तो भी तेरा ध्यान हो।
रत्न बहुमूल्य हों या
सैकत – सरित – कूल
सबमें उपासना
तुम्हारी भगवान हो ।।

तृण हों या नेत्र – कंज
प्रमदा – सुभग – अंग
रंक – भूप सबमें
तुम्हारा दिव्य – ज्ञान हो।
मुख से बचन जो भी
निकले तुम्हारा नाम
लोचन जिधर देखें
आपका ही ध्यान हो।।

वासनाओं को समूल
नष्ट कर कब देव
शुचि – सुरसरि – तट –
कुंज में रहूँगा मैं।
कब शिव – सम्मुख ले
अँजुली में क्षीर खड़ी
नारियों के व्यूह मध्य
गौरी को लखूँगा मैं।।

किस काल भाग्य वश
शैलजा को प्राप्त हुए
शंकर से श्रेष्ठ पति
प्रभु को भजूँगा मैं।
दे दो बरदान भोले
"रंजन" की लेखनी को
तेरा बस तेरा पद
गान ही करूँगा मैं।।

शुचि – जूट – कानन से
पावन – प्रवेग – नीर
नीलकंठ में विशाल
सर्पमाल भा रही।
डम – डम – डम – डम
डमरू की ध्वनि तेज
ताण्डव की तीव्र नृत्य
गति हरषा रही।।

तेज विकराल लाल –
लोचन हैं शंकर के
प्रांगण – ललाट – अग्नि,
मदन जला रही।
देवि पार्वती कुचाग्र
चित्र रचने में श्रेष्ठ
भोले शिव रुप छवि
अन्तर समा रही।।

"रंजन" कृत "शिवताण्डवक"
नित्य पाठ कर जोय।
तन मन विभव, कलेश
सब मिटे प्रफुल्लित होय।।